पारस-पत्थर

रोबर्ट लुई स्टीवनसन

पारस-पत्थर

बड़ा भाई उस पारस-पत्थर की खोज में जाता है जो सच को परख सकता है और जिसे खोजकर वह एक राजकुमारी से विवाह कर सकता है और राज्य पा सकता है. असली पारस पाने से पहले वह कई नकली पारस ढूँढ़ लेता है. लेकिन जब सच्चा पारस लेकर वह घर लौटता है, तो पाता है कि छोटे भाई ने राजकुमारी से पहले ही विवाह कर लिया था.

वह बहुत दुःखी होता है लेकिन जब पारस-पत्थर दिखलाता है कि छोटा भाई और राजकुमारी तुच्छ और झूठे लोग हैं तो वह समझ जाता है कि जीवन की सच्ची प्रसन्नता सत्य की अनुभूति में है, राज्यों और राजकुमारियों में नहीं.

रोबर्ट लुई स्टीवनसन

सत्य का उपहार जीवन का सबसे सुंदर उपहार होता है. सत्य प्रसन्नता दे या दुःख, लेकिन यह मनुष्य को दृढ़ और सजग बनाता है.

इस कहानी में एक राजकुमारी से विवाह करने के लिए और राज्य पाने के लिए बड़ा भाई पारस-पत्थर की खोज में जाता है. जब वह असली पारस खोज लेता है और उसे लेकर घर लौटता है तो वह पाता है कि वह अपना पुरस्कार खो चुका था. छोटे भाई ने राजकुमारी के साथ विवाह कर लिया था और राजा बन चुका था. पहले तो बड़ा भाई रोने लगता है फिर वह पारस को उनका ओर घुमाता है और देखता है कि उन्हें कोई पुरस्कार न मिला था क्योंकि जो जीवन वह जी रहे थे वह अपूर्ण था. पारस के प्रकाश में उसने देखा कि छोटा भाई और राजकुमारी कैसे थे. उन की सच्चाई जान कर वह संसार के हर रूप की सच्चाई जानने को स्वतंत्र था. अपनी यात्रा को दौरान उसे कई नकली पारस मिले थे, जो संसार का आधा-अधूरा सत्य ही दर्शाते थे. उसने महसूस किया कि सच्चे पारस के प्रकाश में हर नकली पारस में कुछ सुंदरता दिखाई देती थी लेकिन जब वह सब इकट्ठे होते तो उनकी सुंदरता लुप्त हो जाती. वह समझ गया कि आधे-अधूरे सच एक-दूसरे का खंडन करते हैं जबकि सच्चा पारस हमें उस सत्य की अनुभूति कराता है जो सदा हमारे साथ था और जो आधे-अधूरे सत्य की सच्चाई से हमें अवगत कराता है.

यह कहानी एक नीतिकथा है. आर. एल. स्टीवनसन ने ऐसी कई कहानियाँ लिखी थीं.

राजा अपनी प्रजा में लोकप्रिय था और उसकी आनंदपूर्वक मुस्कान मनमोहक थी लेकिन उसके भीतर उसकी आत्मा बड़ी संकुचित थी. उसके दो बेटे थे. राजा को छोटा बेटा अधिक प्रिय था क्योंकि वह उसके जैसा ही था. लेकिन राजा अपने बड़े बेटे से भयभीत रहता था.

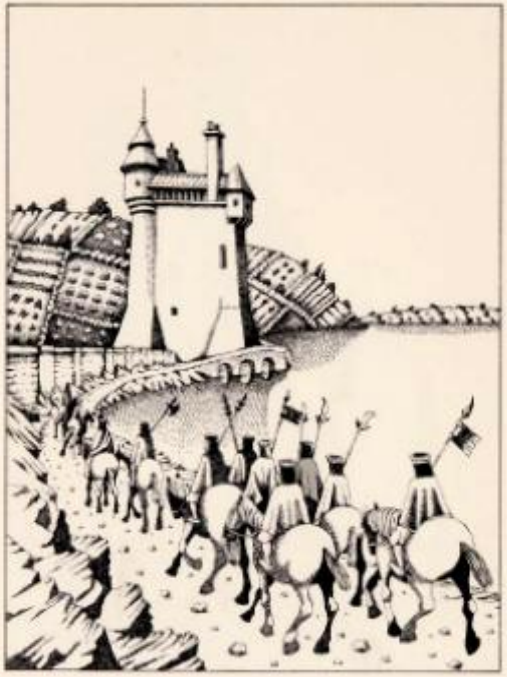

एक दिन ऐसा हुआ कि सुबह होने से पहले ही किले में नगाड़ा बजने लगा. अपने दोनों राजकुमारों के साथ, राजा घोड़े पर चल दिया. बहादुर सैनिकों की एक टोली उनके पीछे आ रही थी. दो घंटों की यात्रा के बाद वह एक भूरे, ऊँचे पहाड़ की तलहटी के पास पहुँच गए.

“हम कहाँ जा रहे हैं?” बड़े राजकुमार ने पूछा.

“इस भूरे पहाड़ के उस पार,” राजा ने कहा और मुस्करा दिया.

“मेरे पिता जानते हैं कि वह क्या कर रहे हैं,” छोटे बेटे ने कहा.

दो घंटे और वह घोड़ों पर चलते रहे और फिर वह एक काली, बहुत गहरी नदी के किनारे पहुँचे.

“हम कहाँ जा रहे हैं?” बड़े राजकुमार ने पूछा.

“इस काली नदी के पार,” राजा ने कहा और मुस्करा दिया.

“मेरे पिता जानते हैं कि वह क्या कर रहे हैं,” छोटे बेटे ने कहा.

और वह सारा दिन चलते रहे और सूर्यास्त के समय वह एक झील के निकट पहुँचे जहाँ एक विशाल किला था.

“हम यहाँ आए हैं,” राजा ने कहा. “यह एक राजा का घर है, जो एक पुजारी है. यहाँ तुम बहुत कुछ सीख सकते हो.”

किले के फाटक के पास राजा, जो एक पुजारी था, उन सब से मिला. वह एक गंभीर व्यक्ति था, उसके निकट उसकी बेटी खड़ी थी. वह लड़की उषा समान सुंदर और लजीली थी और उसकी मुस्कान बहुत आकर्षक थी.

“यह दोनों मेरे पुत्र हैं,” पहले राजा ने कहा.

“और यह मेरी बेटी है,” राजा जो एक पुजारी था बोला.

“यह तो बड़ी रूपवान लड़की है,” पहले राजा ने कहा, “और मुझे इसकी मुस्कान बहुत प्यारी लगती है.”

“यह तो अद्भुत, हृष्ट-पुष्ट युवक हैं,” दूसरे राजा ने कहा, “और इनकी गंभीरता मुझे अच्छी लगी.”

और फिर दोनों राजाओं ने एक-दूसरे को देखा, “शायद बात बन जाये.”

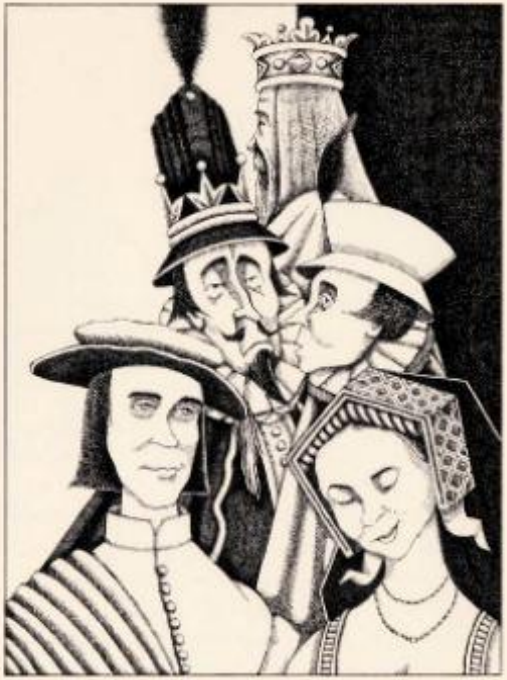

और इस बीच दोनों राजकुमारों ने राजकुमारी को देखा, एक का चेहरा विवर्ण हो गया और दूसरे का सुर्ख. और लड़की, आँखें नीचे किये, मुस्कराती रही.

"यही लड़की है जिससे मैं विवाह करूँगा," बड़े राजकुमार ने कहा. "क्योंकि यह मुझे ही देख कर मुस्कराई थी."

लेकिन छोटे राजकुमार ने अपने पिता की आस्तीन को हल्के से खींचा. "पिताजी," उसने कहा, "आपके कान में कुछ कहना चाहता हूँ. अगर आप की कृपादृष्टि मुझ पर है तो क्या मैं इस राजकुमारी से विवाह कर सकता हूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि यह मुझे देख कर मुस्कराई थी?"

"तुम्हारे कान में कुछ कहना है," उसके पिता ने कहा. "धैर्य का परिणाम अच्छा होता है और सफल वही होता है जो अवसर का लाभ उठाता है."

वह किले के अंदर आए और उन्होंने भोजन किया; वो घर इतना विशाल था कि दोनों युवक आश्चर्यचकित थे और राजा, जो एक पुजारी था, मेज़ की एक तरफ मौन बैठा था. लड़के श्रद्धा से उसे देख रहे थे और, अपनी आँखें नीची किए सेविकायें, उन को भोजन परोस रही थीं. इस अनुभव से उनके हृदय प्रसन्नता से खिल उठे थे.

दिन चढ़ने के पहले ही बड़ा बेटा उठ गया और उसने देखा कि राजकुमारी बुनाई कर रही थी क्योंकि वह एक परिश्रमी लड़की थी.

“राजकुमारी,” उसने कहा. “तुम से विवाह करके मुझे प्रसन्नता होगी.”

“तुम्हें मेरे पिता से बात करनी चाहिए,” लड़की ने कहा और नीचे देखते हुए मुस्करा दी. उसका चेहरा गुलाब समान हो गया.

“वह मुझ से प्यार करती है,” बड़े लड़के ने कहा. वह झील के किनारे आ गया और गाने लगा.

कुछ समय उपरांत छोटा लड़का आया. “राजकुमारी,” उसने कहा. “अगर हमारे पिता स्वीकृति दें तो मैं तुम से विवाह करना चाहूँगा.”

“तुम्हें मेरे पिता से बात कर सकते हो,” लड़की ने कहा और नीचे देखते हुए मुस्करा दी. उसका चेहरा गुलाब समान हो गया.

“कितना आज्ञाकारी लड़की है,” छोटे लड़के ने कहा. “यह अच्छी पत्नी बनेगी.” और फिर उसने सोचा, “मैं क्या करूँ?” और उसे ध्यान आया कि लड़की का पिता एक पुजारी था. इसलिए वह मंदिर गया और एक नेवले और एक खरगोश की बलि उसने दी.

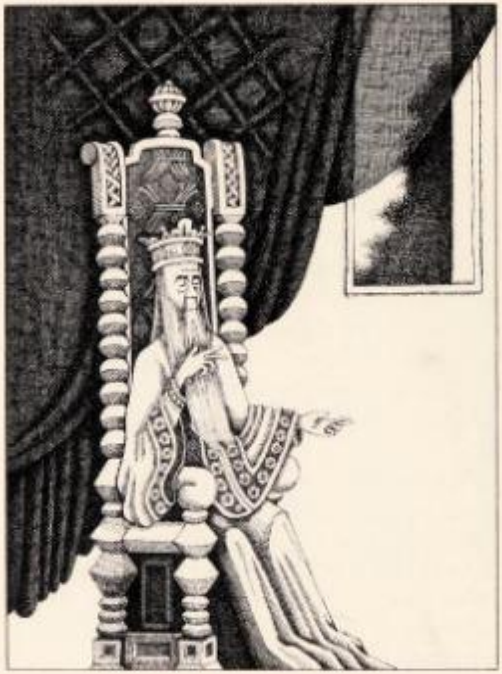

शीघ्र ही यह समाचार सबको पता लग गया. पहले राजा और उसके दोनों राजकुमारों को राजा ने, जो पुजारी था, अपने समक्ष बुलाया. वह एक ऊँचे सिंहासन पर विराजमान था.

“मैं न संपत्ति को महत्व देता हूँ,” राजा ने, जो पुजारी था, कहा, “और न ही सत्ता को. यहाँ हम परछाइयों के छलावे में रहते हैं जिन से मन उकता गया है. हवा में सूखते कपड़ों समान हम यहाँ रहते हैं और मन हवा से ऊब चुका है. लेकिन एक बात से मुझे बहुत प्यार है और वह है सच्चाई. मैं अपनी बेटी का विवाह उस युवक के साथ करूँगा जो एक पारस-पत्थर लाकर मुझे देगा. उसी पत्थर के प्रकाश में झूठ लुप्त हो जाता है और जो सत्य है वह स्पष्ट हो जाता है. इसलिए लड़को, जाओ और एक पारस-पत्थर ढूँढ़ कर लाओ और मेरी बेटी से विवाह करो.”

"आपके कान में कुछ कहना है," छोटे राजकुमार ने पिता से कहा. "मेरे विचार में उस पत्थर के बिना हम प्रसन्न हैं."

"तुम्हारे कान में कुछ कहना है," उसके पिता ने कहा. " मैं तुम्हारे विचार से सहमत हूँ लेकिन सफल वही होता है जो अवसर का लाभ उठाता है." और वह उस राजा को देख कर मुस्कराया जो एक पुजारी था.

लेकिन बड़ा बेटा खड़ा हुआ और उस राजा को जो एक पुजारी था पिता कह कर बुलाया, "चाहे आपकी बेटी के साथ मेरा विवाह हो या न हो, मैं आपको इसी नाम से बुलाऊँगा क्योंकि आप ज्ञानी हैं और मैं इसी पल उस पारस-पत्थर की खोज में निकल पड़ूँगा." उसने अलविदा कहा और पत्थर की खोज में चल दिया.

“मुझे लगता है कि मैं भी पत्थर का खोज में जाऊँ,” छोटे बेटे ने कहा, “अगर आपकी अनुमति हो तो, क्योंकि मैं उस लड़की से प्यार करने लगा हूँ.”

“तुम मेरे साथ घर चलोगे,” उसके पिता ने कहा.

इसलिए वह घर लौट आये और जब वह अपने किले में पहुँचे तो राजा अपने बेटे को कोषागार के अंदर ले आया. “यहाँ,” राजा ने कहा, “वह पारस-पत्थर है जो सत्य के दर्शन कराता है, क्योंकि प्रत्यक्ष सत्य के अतिरिक्त कोई अन्य सत्य नहीं होता. अगर तुम इस में देखोगे तो अपने को वैसा ही देख पाओगे जैसे कि तुम हो.”

और छोटे बेटे ने उस में देखा और उसे अपना चेहरा वैसा दिखाई दिया जैसा एक बिना दाढ़ी वाले युवक का होता है. वह बहुत प्रसन्न था और वह वस्तु एक दर्पण थी.

“यह तो कोई महान कार्य नहीं था,” उसने कहा, “लेकिन अगर इसके कारण राजकुमारी से मेरा विवाह हो जाता है तो मैं कभी दुःखी न होवूँगा. लेकिन मेरा भाई कैसा मूर्ख है, जो चीज़ घर में ही थी उसे खोजने वह बाहर दुनिया में गया है.”

तो वह दूसरे किले में वापस आ गए और दर्पण उस राजा को दिखाया, जो एक पुजारी था. उसने दर्पण में देखा और अपने को एक राजा के रूप में देखा और अपने घर को राजमहल के रूप में और अन्य सब चीज़ों को उनके अपने रूप में देखा. वह प्रसन्नता से चिल्लाया और उसने ईश्वर का धन्यवाद किया. “अब मैं समझ गया हूँ कि प्रत्यक्ष सत्य के अतिरिक्त कोई सत्य नहीं होता और मैं जान गया हूँ कि मैं एक राजा हूँ हालांकि मेरा दिल कभी-कभी संदेह पैदा कर देता था.” उसने अपने मंदिर को गिरा कर एक नया मंदिर बनवाया. उसने छोटे राजकुमार के साथ अपनी बेटी का विवाह कर दिया.

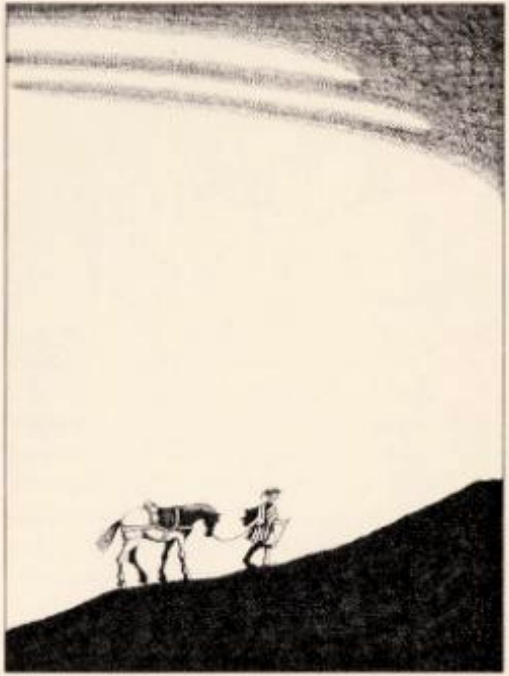

इस बीच सत्य की जाँच करने वाले पारस-पत्थर की खोज में बड़ा राजकुमार दुनिया में कई जगह गया. जब भी वह किसी बस्ती में पहुँचता तो वहां के लोगों से पारस-पत्थर के बारे में पूछता. और हर जगह लोग कहते, “हम ने उसके बारे में सुना ही नहीं है, वह सिर्फ हमारे पास है. हमारी चिमनी के साथ अभी भी लटक रहा है.” बड़ा बेटा उन की बात सुन कर प्रसन्न हो जाता और विनती करता कि वह चीज़ उसे दिखायें. और कभी-कभी वह चीज़ दर्पण निकलती, जिसमें सब चीज़ें वैसी दिखती जैसी थीं और तब वह कहता, “यह पारस नहीं हो सकता क्यों कि जो दिखता है, सत्य उससे कहीं अधिक विस्तृत है.” और कभी-कभी वह चीज़ कोयले का टुकड़ा होती, जिस में कुछ दिखाई न पड़ता. और वह कहता, “यह नहीं हो सकता क्योंकि इसमें कुछ तो दिखना चाहिए.”

और कभी वह सच में पारस होता, सुंदर रंगों वाला, जिसे चमका कर रखा होता और जो हर ओर से झिलमिला रहा होता. जब उसे वह दिखता तो वह माँग लेता. वहाँ के लोग उसे वह दे देते क्योंकि उपहार देने में वह लोग बहुत उदार थे. और आखिरकार उसका झोला इन चीज़ों से भर गया. जब वह घोड़े पर सफर करता तो वह सब पत्थर खनखनाते. और जब वह रास्ते में कहीं रूकता तो वह उन्हें झोले से निकाल कर उनकी जाँच करता जब तक कि उसका दिमाग पवन-चक्की की तरह घूमने न लगा.

“सर्वनाश हो इस उद्यम का,” बड़े बेटे ने कहा, “यह समाप्त ही नहीं हो रहा. यहाँ मेरे पास लाल रंग के और हरे रंग के और नीले रंग के पत्थर हैं और यह सब मुझे उत्तम लगते हैं पर फिर भी एक दूसरे के समक्ष यह सब बेकार लगते हैं. सर्वनाश हो इस उद्यम का. यह उद्यम अगर उस राजा, जो एक पुजारी है, और जिसे मैंने पिता कहा है, के लिए न होता, अगर यह उद्यम उस सुंदर राजकुमारी के लिए न होता जो मेरे हृदय में वास कर रही है और मेरे मन में संगीत की तरंगे जगा रही है, मैं इन पत्थरों को सागर में फेंक देता और घर लौट जाता और राजा बन कर रहता.

लेकिन उसके मन की अवस्था उस शिकारी के मन के समान थी जिसने पहाड़ पर हिरण देख लिया हो, फिर चाहे रात हो जाये, और आग जला दी जाये, और उसके घर में रोशनी होने लगे, हिरण मारने की इच्छा उसके मन में दहकती रहती है.

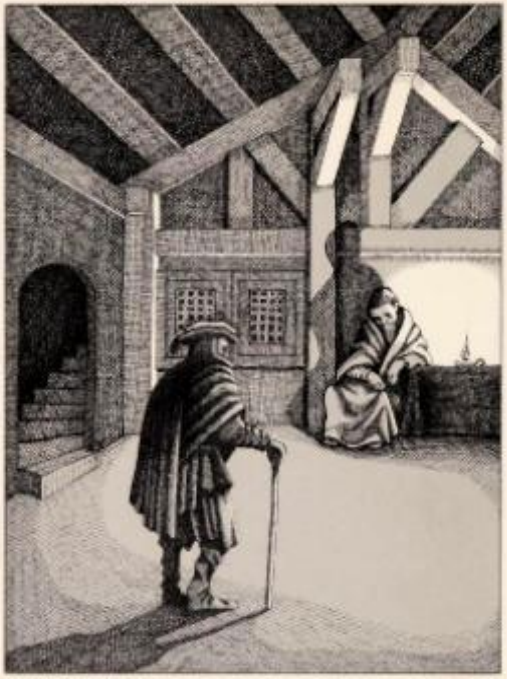

अब कई वर्षों के बाद बड़ा राजकुमार सागर तट के निकट पहुँचा, रात का समय था और वह जगह बहुत भयंकर थी, सागर का कोलाहल बहुत ऊँचा था. वहाँ एक घर था और एक आदमी जलती हुई मोमबत्ती के पास बैठा था, उसने कोई आग न जला रखी थी. बड़ा राजकुमार उसके पास आया और उस आदमी ने उसे पीने के लिए पानी दिया क्योंकि उसके पास रोटी नहीं थी. जब उससे कुछ कहा गया तो वह अपना सिर हिलाता रहा क्योंकि उसके पास कहने को कोई शब्द न थे.

"क्या सच परखने वाला पारस-पत्थर तुम्हारे पास है?" बड़ा राजकुमार ने पूछा. और जब उस आदमी ने अपना सिर हिलाया तो, "मुझे पता होना चाहिए था," बड़ा राजकुमार चिल्लाया. "मेरे पास यहाँ थैला भर कर ऐसे पत्थर हैं!" और यह कह कर वह हँसा हालांकि वह बहुत ऊब चुका था.

इस बात पर वह आदमी भी हँसा और उसके हँसने पर मोमबत्ती बुझ गई.

"सो जाओ," उसने कहा, "क्योंकि मुझे लगता है कि तुम बहुत दूर आ चुके हो और तुम्हारी खोज पूरी हो गई है और मेरी मोमबत्ती भी बुझ गई है.

फिर जब सुबह हुई तो उस आदमी ने बड़े राजकुमार को एक साफ पत्थर दिया. वह पत्थर न तो सुंदर था और न उसका कोई रंग था. बड़े राजकुमार ने उसे तिरस्कार से देखा और निराशा से सिर हिलाया क्योंकि वह उसे बहुत ही साधारण लग रहा था. वह वहाँ से चल दिया.

सारा दिन वह यात्रा करता रहा. उसका मन शांत था. खोज करने की इच्छा मिट चुकी थी. “आखिरकार, अगर यह मामूली पत्थर ही पारस हुआ तो?” उसने कहा और वह अपने घोड़े से नीचे उतर गया और अपना झोला उसने रास्ते के किनारे खाली कर दिया.

अब, एक-दूसरे के प्रकाश में सारे पारस अपना रंग और अपनी चमक खो बैठे और वैसे ही मलीन हो गए जैसे भोर होते ही तारे मलीन हो जाते हैं. लेकिन साधारण पत्थर के प्रकाश में उनकी सुंदरता दिख रही थी, और वह साधारण पत्थर सबसे अधिक चमक रहा था. बड़े राजकुमार ने अपने माथे पर हाथ मारा और बोला, “क्या यही तो सत्य नहीं है?” वह चिल्लाया. उसने उस पत्थर को घुमाया और उसके प्रकाश को आकाश पर डाला और आकाश और भी गहरा दिखाई देने लगा. उसने उस पत्थर को पहाड़ियों की ओर घुमाया. पहाड़ियाँ कठोर और मज़बूत दिखाई दीं, लेकिन वो जीवन से भरी हुई थीं. उसने पत्थर को मिट्टी की ओर घुमाया और उसने मिट्टी को भय और आनंद से देखा. उसने पत्थर को अपनी ओर घुमाया और उसने झुककर ईश्वर की आराधना की.

“ईश्वर का धन्यवाद,” बड़े राजकुमार ने कहा, “मैंने पारस-पत्थर खोज लिया है. अब मैं लौट सकता हूँ और उस राजकुमारी के पास जा सकता हूँ जो मेरे हृदय में वास करती है और मेरे मन में संगीत की तरंगे जगाती है.”

जब वह किले के निकट पहुँचा तो उसने उस जगह बच्चों को खेलते देखा जहाँ पुराने दिनों में राजा उनसे मिले थे और इस कारण उसकी प्रसन्नता कम हो गई, क्योंकि उसके मन में विचार आया, “यहाँ मेरे बच्चे खेलने चाहिए थे.” और जब वह महल के विशाल कक्ष में आया तो उसने भाई को सिंहासन पर बैठे देखा, राजकुमारी उसके साथ थी. यह देखकर उसे क्रोध आ गया क्योंकि उसने मन ही मन सोचा, “उस सिंहासन पर मुझे बैठे होने चाहिए था और राजकुमारी मेरी बगल में होनी चाहिए थी.”

“तुम कौन हो?” उसके भाई ने पूछा. “और तुम इस किले में क्या कर रहे हो?”

“मैं तुम्हारा बड़ा भाई हूँ,” उसने कहा. “और मैं राजकुमारी से विवाह करने आया हूँ क्योंकि सच्चाई की जाँच करने वाला पारस-पत्थर मैं खोज कर ले आया हूँ.”

उसकी बात सुनकर छोटा भाई ज़ोर से हँस पड़ा. “अरे,” वह बोला, “मैंने तो पारस-पत्थर वर्षों पहले ही ढूँढ़ लिया था और राजकुमारी से विवाह किया था. फाटक पर जो बच्चे खेल रहे हैं, वह हमारे हैं.”

बड़े भाई का चेहरा भोर की तरह धुँधला हो गया. “मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे साथ न्याय करो,” उसने कहा, “क्योंकि मुझे लगता है कि मेरा जीवन नष्ट हो गया है.”

“न्याय?” छोटे भाई ने कहा, “मेरे न्याय पर, या राजा जो हमारे पिता हैं उन पर, संदेह करना तुम्हें शोभा नहीं देता. तुम अशांत और आवारा, अंजान व्यक्ति हो और हम आराम-पसंद है और सब हमें जानते हैं.”

“नहीं,” बड़े भाई ने कहा, “तुम्हारे पास और भी बहुत कुछ है. थोड़ा धैर्य रखो. और मेरी बात सुनो, दुनिया पारस-पत्थरों से भरी पड़ी है, लेकिन असली पारस सरलता से नहीं मिलता.”

“मैं किसी बात के लिए लज्जित नहीं हूँ,” छोटे भाई ने कहा. “वह रहा पारस, उस में देखो.”

तब बड़े भाई ने दर्पण में देखा, और वह बहुत दुःखी और आश्चर्यचकित हुआ. उसने देखा कि वह वृद्ध हो चुका था. उसके सिर के बाल सफेद हो गए थे. वह नीचे बैठ गया और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा.

“देखो,” छोटे भाई ने कहा, “तुम ने कैसी मूर्खता की, जो वस्तु हमारे पिता के कोषागार में रखी थी उसे खोजने के लिए तुम दुनिया भर में भटकते रहे और लौट कर आए तो ऐसे बूढ़े के रूप में कि कुत्ते तुम पर भौंकने लगे. न तुम्हारे पास पत्नी है, न बच्चा. मैं आज्ञाकारी और बुद्धिमान था, मैं राजा हूँ, मेरे पास शक्ति है, सुख-सुविधायें हैं और मैं अपने राज्य में प्रसन्न हूँ.”

“मुझे लगता है कि तुम बहुत निर्मम हो,” बड़े भाई ने कहा, और फिर उसने झोले से साफ पत्थर निकाला और उसका प्रकाश अपने भाई पर डाला. अरे देखो, वह झूठ बोल रहा था, उसकी आत्मा सिकुड़ गई थी और उसका दिल भयभीत था और उसके मन में कोई स्नेह न था. यह देखकर बड़ा भाई रो दिया. फिर उसने पत्थर के प्रकाश को राजकुमारी पर डाला. और देखो, वह तो बस एक औरत का मुखौटा भर थी, भीतर वह मर चुकी थी, उसकी मुस्कराहट घड़ी की टिक-टिक समान और वह नहीं जानती थी कि वह किस के लिए मुस्करा रही थी.

"ठीक है," बड़े भाई ने कहा, "मुझे लगता है कि संसार में अच्छाई भी है और बुराई भी. इस किले में तुम्हारा जितना कल्याण हो सकता है, उतना कल्याण हो. लेकिन मैं अपना पारस ले कर यहाँ से जा रहा हूँ."

समाप्त